E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 08-10-2024
Accepted: 17-11-2024
Published: 05-01-2025

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 1; 2025; Page No. 394-401

अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों का कल्याण

[1]Pratima Kumari and [2]Dr. Rajneesh Rai

[1]Research Scholar, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India
[2]Professor, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20157351

Corresponding Author: Pratima Kumari

सारांश

किसी भी समुदाय की प्रगति उसके ह्यूमन रिसोर्स की क्वालिटी पर निर्भर करती है। भारत में समाज के दूसरे वर्गों की तुलना में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों की शिक्षा में भागीदारी का अनुपात बहुत कम पाया गया है। अनुभवजन्य विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उच्च जातियों के व्यक्तियों को शिक्षा, व्यावसायिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि के अधिक अवसर मिलते हैं, जबकि निचली जातियों को अक्सर असंगठित क्षेत्र की कम वेतन वाली नौकरियों तक सीमित रहना पड़ता है। यद्यपि आरक्षण नीतियों और सामाजिक सुधार आंदोलनों ने कुछ हद तक गतिशीलता और सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है, फिर भी संरचनात्मक असमानताओं और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को समाप्त करने के लिए निरंतर और समावेशी प्रयासों की आवश्यकता है।अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि एक न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज के निर्माण हेतु केवल कानूनी प्रावधान पर्याप्त नहीं हैं; इसके लिए सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन, संसाधनों का समान वितरण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की सार्वभौमिक पहुँच, तथा जाति-आधारित भेदभाव के विरुद्ध सख्त क्रियान्वयन आवश्यक है। तभी भारत में जातिगत पहचान का प्रभाव कम होकर सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित हो सकते हैं।

मूल शब्दः अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, उच्च शिक्षा, जागरूकता, योजना।

प्रस्तावना

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना की विशेषता जाति नामक एक अनूठी सामाजिक संस्था है। भारतीय जाति व्यवस्था देश के भीतर सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक प्रतिबंध की व्यवस्था है। जाति व्यवस्था के भीतर, समुदायों को हज़ारों अंतर्जातीय वंशानुगत समूहों द्वारा परिभाषित किया जाता है, जिन्हें जाति के रूप में जाना जाता है। जातियों को प्रसिद्ध श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है, जिन्हें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में जाना जाता है। कुछ व्यक्तियों, जैसे कि विदेशी, खानाबदोश, वनवासी जनजातियाँ और चांडाल को एक साथ बहिष्कृत किया गया और उन्हें अछूत माना गया। वर्ण व्यवस्था से सामाजिक स्तरीकरण के रूप में उभरी जाति व्यवस्था देश के लिए विशिष्ट थी। इसके अलावा, इसे भारतीय समाज का एक अविभाज्य पहलू माना जाता है।

दुनिया के किसी भी दूसरे हिस्से में जाति व्यवस्था के लिए कोई संस्था नहीं है। भारत के अलावा, दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी जातियों के प्रमाण मिलते हैं, लेकिन सबसे सटीक प्रमाण भारत में मौजूद हैं। जाति शब्द लैटिन शब्द कास्टस से लिया गया है, जिसका अर्थ है शुद्ध। पुर्तगाली लोगों ने भारतीय सामाजिक स्तरीकरण को दर्शाने के लिए इसका इस्तेमाल किया। व्यक्तियों ने यह दृष्टिकोण बनाया कि इस प्रणाली का उपयोग रक्त की शुद्धता को बनाए रखने के लिए किया जाता है। इस शब्द को 1563 में गार्सिया डी ओर्टा ने भारतीय जाति व्यवस्था के लिए लागू किया था। जाति के लिए संस्कृत शब्द वर्ण है, जिसका अर्थ है रंग। जाति व्यवस्था में कई जटिलताएँ हैं, जिसके कारण व्यक्ति इसकी सटीक परिभाषा को समझने में सक्षम नहीं हो पाया है। जाति व्यवस्था का प्रसार और विकास बहुत बड़ा है। इसे ऐसे कार्य के रूप में संदर्भित किया जाता है, जिसे व्यक्ति या वर्ग की शक्ति या अधिकार द्वारा प्राप्त किया जाना है। जाति व्यवस्था मुख्य रूप से व्यक्तियों के समूहों को संदर्भित करती है। इसे शास्त्रों द्वारा बनाया गया है। मानदंड और मूल्यों को महत्वपूर्ण माना जाता है। व्यक्तियों को मानदंडों और मूल्यों के संदर्भ में अच्छी तरह से जानकारी होना आवश्यक है। इन्हें एक प्रभावी और संगठित जीवन जीने की कुंजी माना जाता है।

भारतीय जाति व्यवस्था को देश के भीतर सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक प्रतिबंध की व्यवस्था के रूप में माना जाता है। समुदायों को हज़ारों अंतर्जातीय वंशानुगत समूहों द्वारा परिभाषित किया जाता है, जिन्हें जाति के रूप में जाना जाता है। जातियों को प्रसिद्ध श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है, जिन्हें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में जाना जाता है। जाति व्यवस्था पर

शोध करते समय, मूल की कुशल समझ हासिल करना आवश्यक है। भारतीय जाति व्यवस्था को समाज के खंडीय विभाजन, पदानुक्रम, भोजन की आदतों पर प्रतिबंध, व्यावसायिक प्रतिबंध, धार्मिक अक्षमता, अंतर्विवाह, सामाजिक दूरी बनाए रखना, अस्पृश्यता और बसावट पैटर्न और शुद्धता की अवधारणा के रूप में परिभाषित किया गया है।

ये विशेषताएँ जाति व्यवस्था को एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करती हैं। हालाँकि, सभी जातियों में सकारात्मक और नकारात्मक पहलू होते हैं जो लाभ और हानि को जन्म देते हैं। जाति व्यवस्था में जो परिवर्तन हुए हैं, उन्हें बदलती दुनिया के अनुसार लाना होगा। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि जाति व्यवस्था की अवधारणा महत्वपूर्ण है और इसे प्रभावी और सुव्यवस्थित तरीके से समझने की आवश्यकता है।

जाति व्यवस्था की उत्पत्ति

पारंपरिक, नस्लीय, राजनीतिक, व्यावसायिक, विकासवादी आदि कई सिद्धांत हैं जो भारत में जाति व्यवस्था को समझाने का प्रयास करते हैं।

पारंपरिक सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार, जाति व्यवस्था दैवीय उत्पत्ति की है। यह कहता है कि जाति व्यवस्था वर्ण व्यवस्था का ही विस्तार है, जहाँ 4 वर्ण ब्रह्मा के शरीर से उत्पन्न हुए। पदानुक्रम के शीर्ष पर ब्राह्मण थे जो मुख्य रूप से शिक्षक और बुद्धिजीवी थे और ब्रह्मा के सिर से आए थे। क्षत्रिय, या योद्धा और शासक, उनकी भुजाओं से आए थे। वैश्य, या व्यापारी, उनकी जांघों से बनाए गए थे। सबसे नीचे शूद्र थे, जो ब्रह्मा के पैरों से आए थे।

नस्लीय सिद्धांत

जाति के लिए संस्कृत शब्द वर्ण है जिसका अर्थ रंग है। भारतीय समाज के जातिगत स्तरीकरण की उत्पत्ति चतुर्वर्ण व्यवस्था में हुई थी - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। भारतीय समाजशास्त्री डीएन मजूमदार अपनी पुस्तक, "रेस एंड कल्चर इन इंडिया" में लिखते हैं, जाति व्यवस्था भारत में आर्यों के आगमन के बाद पैदा हुई। ऋग्वेदिक साहित्य आर्य और गैर-आर्यों (दास) के बीच न केवल उनके रंग-रूप में बल्कि उनकी बोली, धार्मिक प्रथाओं और शारीरिक विशेषताओं में भी बहुत अंतर पर जोर देता है।

राजनीतिक सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार, जाति व्यवस्था ब्राह्मणों द्वारा खुद को सामाजिक पदानुक्रम की सबसे ऊंची सीढ़ी पर रखने के लिए बनाई गई एक चतुराईपूर्ण युक्ति है। डॉ. घुर्ये कहते हैं, "जाति भारतीय-आर्य संस्कृति की ब्राह्मणवादी संतान है जिसे गंगा की भूमि में पाला गया और फिर भारत के अन्य भागों में स्थानांतरित कर दिया गया।" ब्राह्मणों ने राजा की आध्यात्मिक योग्यता की अवधारणा को भी जोड़ा, ताकि भूमि के शासक का समर्थन प्राप्त करने के लिए पुजारी या पुरोहित के माध्यम से राजा की आध्यात्मिक योग्यता की अवधारणा को जोड़ा जा सके।

व्यावसायिक सिद्धांत

जाति पदानुक्रम व्यवसाय के अनुसार है। जिन व्यवसायों को बेहतर और सम्मानजनक माना जाता था, वे उन लोगों को श्रेष्ठ बनाते थे जो गंदे व्यवसायों में लगे हुए थे। न्यूफील्ड के अनुसार, "कार्य और केवल कार्य ही भारत में जाति संरचना की उत्पत्ति के लिए जिम्मेदार है।" कार्यात्मक विभेदन के साथ व्यावसायिक विभेदन और कई उपजातियाँ आईं जैसे लोहार (लोहार), चमार (चर्मकार), तेली (तेल बनाने वाले) ।

साहित्य समीक्षा

अफ़साना, डॉ. एट अल. (2023) [1] । भारतीय संस्कृति में जाति व्यवस्था एक जटिल और गहराई से जड़ जमाए सामाजिक-धार्मिक संरचना बनी हुई है। यह विश्लेषण इसकी ऐतिहासिक उत्पत्ति, सामाजिक-आर्थिक निहितार्थ और धार्मिक आधारों पर गहराई से चर्चा करता है। मुख्य विषयों में जाति विभाजन की पदानुक्रमित प्रकृति, भेदभाव और असमानता का स्थायित्व और व्यवस्था को बनाए रखने और चुनौती देने में धर्म की भूमिका शामिल है। इस अध्ययन का उद्देश्य जाति व्यवस्था के संदर्भ में धर्म और समाज के बीच परस्पर क्रिया की जांच करना है। हम यह पता लगाते हैं कि जाति की पहचान शिक्षा, रोजगार और राजनीति जैसे कारकों के साथ कैसे जुड़ती है, जो भारत के सामाजिक ताने-बाने को आकार देती है।

माथुर, गौरव. (2022) [2]। यह पेपर भारत में जाति व्यवस्था के बारे में बात करता है और समाज में लंबे विकास के बाद भी यह देश में क्यों मौजूद है। यह स्पष्ट दृष्टिकोण देगा कि समाज जाति व्यवस्था की समस्या से कैसे प्रभावित है और हम इसका सही समाधान कैसे निकाल सकते हैं। पेपर समाज में बदलाव के दौरान जाति व्यवस्था में हुए बदलावों को भी समझाएगा। यह वर्तमान परिदृश्य पर तर्क देता है कि जाति व्यवस्था के पुराने इतिहास से क्या अंतर आया है। क्या जाति व्यवस्था सामाजिक असमानता के निर्माण की ओर अग्रसर है?

वैद, दिव्या. (2014) [3]। जाति व्यवस्था, इसकी प्रमुख विशेषताएँ, तथा इसके सूक्ष्म और अधिक स्पष्ट परिवर्तन, साथ ही इसकी निरंतरता और व्यापकता, भारतीय समाज के अध्ययन के लिए केंद्रीय रहे हैं। यह समीक्षा जाति और उसके परिवर्तनों के बारे में एक विशिष्ट दृष्टिकोण प्रदान करती है, जिसमें सामाजिक-आर्थिक या श्रम बाज़ार आयाम पर जोर दिया गया है। ऐसा दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि जाति की विशिष्ट विशेषताओं में से एक व्यवसायों की विरासत है। आधुनिकीकरण का एक प्रमुख तर्क व्यावसायिक विरासत से दूर बढ़ता हुआ आंदोलन रहा है। यह समीक्षा जाति के "ओरिएंटलिस्ट" दृष्टिकोण के लिए सीमित समर्थन का पता लगाती है, जो अनिवार्य रूप से अपरिवर्तनीय है और जाति की तरल प्रकृति और आर्थिक क्षेत्र में इसके परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करती है।

अहमद, अज़ीम. (2023) [4]। यह लेख हाशिए पर पड़ी मुस्लिम बिरादरी की सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया में जाति संगठनों की भूमिका की जांच करता है, जिसमें विशेष रूप से रईन (सब्जी बेचने वाली) जाति पर ध्यान केंद्रित किया गया है। लेख जाति पंचायत, संघ और फाउंडेशन का मानचित्रण करता है, सामाजिक गतिशीलता और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की प्रक्रिया में उनकी संबंधित भूमिका और कार्य को उजागर करता है। मैं दिखाता हूं कि विभिन्न संगठन समग्र प्रक्रिया में एक दूसरे के पूरक हैं। जाति पंचायत बिरादरी सदस्यों के आंतरिक मामलों को विनियमित करने के लिए जाति समूह के मुखिया (चौधरी) के पारंपरिक अधिकार पर निर्भर करती है। जाति संघ समूह की सामूहिक पहचान को मजबूत करने और चुनावी प्रक्रिया में प्रभाव डालने के लिए एकता को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। अंत में, जाति के सदस्य स्थानीय स्तर पर संगठन भी चलाते हैं, जैसे कि रईन फाउंडेशन, जो सार्वभौमिक सिद्धांतों की अपील करते हुए

बिरादरी से परे अपनी गतिविधियों की पहुंच का विस्तार करने की कोशिश करता है। सामूहिक रूप से ये संगठन रईन के लिए एक उच्च दर्जा का दावा करने का प्रयास करते हैं।

कपूर, राधिका. (2023) [5]। भारत में जाति व्यवस्था में हो रहे बदलावों को समझना। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य भारत में जाति व्यवस्था में हो रहे बदलावों की कुशल समझ हासिल करना है। बदलावों का प्राथमिक उद्देश्य समुदाय के सदस्यों की भलाई और सद्भावना को बढ़ावा देना है। इस तरह, पूरे राष्ट्र की प्रगति होगी। सभी जातियों से संबंधित व्यक्तियों को व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में प्राप्त किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के लक्ष्यों और उद्देश्यों के बारे में अच्छी तरह से जानकारी होनी चाहिए। इसके अलावा, उन्हें विभिन्न प्रकार के नौकरी कर्तव्यों और कार्यप्रणाली के बारे में अपनी जानकारी बढ़ानी चाहिए जिन्हें एक सुव्यवस्थित और संतोषजनक तरीके से व्यवहार में लाया जाना है। इन्हें वांछित परिणाम उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण माना जाता है। जिन महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है उनमें से एक यह है कि नैतिकता, आचार, परिश्रम और कर्तव्यनिष्ठा के गुणों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

सामग्री एवं विधियाँ

यह अध्ययन के लिए निर्धारित उद्देश्यों की संभावित व्याख्या का पता लगाने के लिए नियोजित विधियों और तकनीकों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन भारत में जाति व्यवस्था और सामाजिक गतिशीलता के समाजशास्त्रीय पहलुओं को समझने के लिए एक विस्तृत शोध पद्धति को अपना रहा है। इसका उद्देश्य जाति व्यवस्था और सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रियाओं के प्रभाव का विश्लेषण करना है।

अनुसंधान डिजाइन

समाजशास्त्रीय विश्लेषण: यह अध्ययन समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से जाति व्यवस्था और सामाजिक गतिशीलता का विश्लेषण कर रहा है। यह जाति व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं और सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रियाओं की गहराई से समीक्षा करता है।

नमूनाकरण प्रक्रिया

अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, चयनित मधुबनी जिले में अध्ययन करने का प्रस्ताव रखा गया और तुलनात्मक अध्ययन के लिए चंपारण जिले से कुछ उत्तरदाताओं का डेटा लिया गया। इसलिए, प्रत्येक जिले से दो गांवों को यादृच्छिक रूप से चुना गया (मधुबनी जिले से सतलखा और लक्ष्मीपुर और चंपारण जिले से खजुरी और बसुआरा)।

तालिका 1: नमूनाकरण

स्तरों	स्थान (बिहार)	नमूनाकरण प्रक्रिया (उद्देश्यपूर्ण रूप से चयनित)	
ज़िला	मधुबनी और चंपारण	मधुबनी	चंपारण
चयनित गांव		सतलखा और लक्ष्मीपुर	खजूरी और बसुआरा
उत्तरदाताओं		237	133

उत्तरदाताओं का चयन

बिहार के मधुबनी और चंपारण जिलों के ग्रामीण गांवों से अनुसूचित जातियों को नमूने के तौर पर चुना गया। अध्ययन के तहत अनुसूचित जातियों को तीन उप-जातियों (ईडीसी- अत्यंत दलित जातियाँ) के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है:

- ईडीसी ग्रुप 1
- ईडीसी ग्रुप 2 और
- ईडीसी समूह 3

उत्तरदाताओं की आयु 18-60 वर्ष तथा 60 वर्ष से अधिक थी। उत्तरदाताओं को दो जिलों के गांवों से यादृच्छिक रूप से चुना गया था तथा कुल नमूना आकार 370 उत्तरदाताओं का था।

डेटा संग्रह के उपकरण और तकनीक

उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने के लिए एक स्व-संरचित साक्षात्कार अनुसूची तैयार की गई थी। साक्षात्कार अनुसूची में स्वतंत्र चरों से संबंधित उत्तरदाताओं के बारे में सामान्य और विशिष्ट जानकारी पर प्रश्न शामिल थे। इसके अलावा, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के वास्तविक वितरण को खोजने के लिए अनुसूची तैयार की गई थी। शोधकर्ता ने पूर्व परीक्षण साक्षात्कार अनुसूची और पैमाने के माध्यम से व्यक्तिगत रूप से डेटा एकत्र किया।

सर्वेक्षण और प्रश्नावली

उद्देश्य: जाति व्यवस्था और सामाजिक गतिशीलता पर डेटा एकत्र करना।

डिजाइन: एक संरचित प्रश्नावली तैयार की जाती है जो जाति व्यवस्था, सामाजिक स्थिति और गतिशीलता के विभिन्न पहलुओं को कवर करती है। सर्वेक्षण विभिन्न समुदायों और सामाजिक वर्गों के बीच आयोजित किया जाता है, जो ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों को कवर करता है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

सामाजिक-आर्थिक आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है, जिससे विभिन्न जाति समूहों के बीच आर्थिक और शैक्षिक गतिशीलता के रुझान की पहचान की जाती है। अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए आवश्यक जानकारी के प्रकार के आधार पर एकत्रित आंकड़ों को वर्गीकृत और सारणीबद्ध किया गया, आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग करके किया गया।

- **आवृत्ति एवं प्रतिशत:** आवृत्ति और प्रतिशत के आधार पर सरल तुलना की गई। उत्तरदाताओं की प्रोफ़ाइल, अनुसूचित जातियों पर सरकारी योजना के ज्ञान और उपयोग, उत्तरदाताओं की शिक्षा की प्रकृति के आकलन के लिए। आवृत्ति और प्रतिशत की गणना की गई।
- **ची-स्क्वायर परीक्षण:** आश्रित और स्वतंत्र चर के बीच संबंध का पता लगाने के लिए ची-स्क्वायर ($\chi 2$) परीक्षण लागू किया गया।

$$\chi^2 = \sum \frac{(O_i - E_i)^2}{E_i}$$

कहाँ;

O_i = अवलोकित मूल्य

E_i = अपेक्षित मूल्य

परीक्षण के लिए सार्थकता का स्तर 0.05 बिन्दु पर लिया गया है।

डेटा विश्लेषण

विषयगत विश्लेषण

तकनीक: साक्षात्कार और सर्वेक्षण डेटा के विश्लेषण में मुख्य विषयों और पैटर्न की पहचान की जाती है। जाति व्यवस्था और सामाजिक गतिशीलता के प्रभावों की गहराई से समीक्षा की जाएगी।

तुलनात्मक विश्लेषण

तकनीक: विभिन्न जाति समूहों और सामाजिक वर्गों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है। यह विश्लेषण जाति व्यवस्था के प्रभाव और सामाजिक गतिशीलता के रुझानों को समझने में सहायक होता है।

परिणाम और चर्चा

आयु, जाति, परिवार का प्रकार, परिवार का आकार, घर, वार्षिक आय, उत्तरदाताओं का व्यवसाय, शिक्षा और उत्तरदाताओं की स्थिति के संबंध में सामाजिक-व्यक्तिगत प्रोफ़ाइल का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में, चुने हुए गांवों में उपलब्ध तीन स्पष्ट रैंकों का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

उत्तरदाताओं का सामाजिक-व्यक्तिगत प्रोफ़ाइल

आयु, जाति, परिवार का प्रकार, परिवार का आकार, भूमि, वार्षिक आय, माता और पिता का व्यवसाय, माता और पिता की शिक्षा की स्थिति के संबंध में सामाजिक-व्यक्तिगत प्रोफ़ाइल को तालिका 2 में संक्षेपित किया गया है।

तालिका 2: उत्तरदाताओं का सामाजिक-व्यक्तिगत प्रोफ़ाइल।

क्रमांक।	चर	वर्ग	कुल संख्या = 370	
			आवृत्ति	%
1	उत्तरदाताओं का लिंग अनुपात	पुरुष	305	82.5
		महिला	65	17.5
2	आयु	18-29	117	31.6
		30-44	128	34.59
		45-59	91	24.59
		60 और उससे अधिक	34	9.18
3	जाति	ईडीसी ग्रुप 1	138	37.29
		ईडीसी ग्रुप 2	132	35.67
		ईडीसी ग्रुप 3	100	27.02
4	परिवार का प्रकार	नाभिकीय	222	60.0
		संयुक्त	148	40.0
5	परिवार का आकार	छोटा (अधिकतम 4 सदस्य)	121	32.7
		मध्यम (5-8 सदस्य)	218	58.9
		बड़ा (8 और अधिक)	19	5.13
6	वैवाहिक स्थिति	विवाहित	301	81.3
		अविवाहित	52	14.0
		विधवा/विधुर	16	4.32
		तलाकशुदा/परित्यक्त	1	0.27
7	घर	पक्का	231	62.43
		कच्चा-पक्का	60	16.21
		कच्चा	79	21.35
8	आर्थिक स्थिति	गरीबी रेखा से नीचे	217	58.64
		एपीएल	105	28.37
		अन्य	48	12.97
9	वार्षिक आय	कम (60,000 तक)	243	65.67
		मध्यम (60,000-1,20,000)	64	17.29
		उच्च (1,20,000 से अधिक)	63	17.02
10	पेशा	पेशेवर और कार्यकारी	15	4.05
		लिपिकीय सेवाएँ	20	5.4
		पैरा प्रोफेशनल और पैरा एक्जीक्यूटिव	15	4.05
		कुशल श्रमिक	31	8.37
		अधीनस्थ सेवाएँ	51	13.78
		व्यापार	27	7.3
		अर्ध-कुशल एवं स्व-नियोजित	62	16.75
		कृषि श्रम	142	38.38
		नौकरशाही सेवाएँ	7	1.9
10	शिक्षा	स्नातकोत्तर एवं उससे ऊपर	13	3.5
		स्नातक	39	10.54
		मध्यवर्ती	59	15.9
		माध्यमिक	64	17.29
		मध्य	52	14
		प्राथमिक	46	12.43
		निरक्षर	97	26.2

हमने चयनित अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जाति की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। वर्तमान अध्ययन के लिए साक्षात्कार किए गए 370 उत्तरदाताओं की सामाजिक-व्यक्तिगत स्थिति के मुख्य संकेतक तालिका 2 में दिए गए हैं।

तालिका 3: उत्तरदाताओं का जातिगत और ग्रामवार वितरण।

उत्तरदाताओं का गांव	सतलखा	लक्ष्मीपुर	खजूरी	बसुआरा	कुल
जाति वर्गीकरण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या
ईडीसी ग्रुप 1	25 (23.36)	60 (37.50)	53 (39.02)	21 (100)	138 (37.29)
ईडीसी ग्रुप 2	82 (76.64)	--	50 (60.98)	--	132 (35.67)
ईडीसी ग्रुप 3	--	100 (62.50)	--	--	100 (27.02)
कुल	107 (100)	160 (100)	103 (100)	21 (100)	370 (100)

तालिका 3 से पता चलता है कि 370 में से 138 (37.29%) उत्तरदाता ईडीसी ग्रुप 1 जाति से संबंधित हैं, जिसमें 25 उत्तरदाता सतलखा से, 60 लक्ष्मीपुर से, 32 खजूरी से और 21 बसुआरा से हैं। 370 उत्तरदाताओं में से 132 (35.67%) ईडीसी ग्रुप 2 जाति से संबंधित हैं, जिसमें 82 उत्तरदाता सतलखा से और 50 उत्तरदाता खजूरी से हैं। कुल उत्तरदाताओं में से शेष 100 (62.50%) केवल लक्ष्मीपुर से ईडीसी ग्रुप 3 जाति से संबंधित हैं।

तालिका 4: उत्तरदाताओं का जाति-वार और ग्राम-वार वर्तमान व्यवसाय।

व्यावसायिक श्रेणी	सतलखा			लक्ष्मीपुर			खजूरी			बसुआरा	कुल योग
	सी	डी	टी	सी	बी	टी	सी	डी	टी	सी	
पेशेवर और कार्यकारी	1	2	3 (2.80)	6	0	6 (5.22)	2	2	4 (4.88)	2 (9.52)	15 (4.05)
लिपिकीय सेवाएँ	2	7	9 (8.41)	4	2	6 (5.22)	1	3	4 (4.88)	1 (4.77)	20 (5.4)
पैरा पेशेवर & पैरा कार्यकारी	1	2	3 (2.80)	7	0	7 (6.09)	1	2	3 (3.66)	2 (9.52)	15 (4.05)
कुशल श्रमिक	3	10	13 (12.15)	5	4	9 (7.83)	1	6	7 (8.53)	2 (9.52)	31 (8.37)
अधीनस्थ सेवाएँ	7	7	14 (13.09)	6	17	23 (20)	5	6	11 (13.41)	3 (14.29)	51 (13.78)
व्यापार	4	3	7 (6.54)	7	7	14 (12.17)	1	3	4 (4.88)	2 (9.52)	27 (7.3)
अर्ध-कुशल एवं स्व-नियोजित	2	11	13 (12.15)	11	9	20 (17.39)	10	14	24 (29.27)	5 (23.81)	62 (16.75)
कृषि श्रम	5	40	45 (42.06)	9	59	68 (20)	11	14	25 (30.49)	4 (19.05)	142 (38.38)
नौकरशाही सेवाएँ	0	0	0 --	5	2	7 (6.09)	0	0	0 --	0 --	7 (1.9)
कुल	25	82	107 (100)	60	100	160 (100)	32	50	82 (100)	21 (100)	370 (100)

स्रोत: प्राथमिक डेटा, नोट: - सी: ईडीसी समूह 1, डी: ईडीसी समूह 2, बी: ईडीसी समूह 3, टी: कुल

अनुसूचित जाति के लिए सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता कार्यक्रम

तालिका 5: अनुसूचित जातियों के लिए सरकारी योजना का ज्ञान और उपयोग।

पैरामीटर	सरकारी योजनाएँ	संख्या	%
सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी	सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए एनबीसीएफडीसी द्वारा शुरू की गई योजनाएं	10	2.7
	प्रधानमंत्री दक्ष और कुशलता सम्पन्न हितग्राही (पीएम-दक्ष) योजना	23	6.2
	अनुसूचित जाति विकास निगमों (एससीडीसी) को सहायता योजना	12	3.2
	अनुसूचित जातियों और अन्य के लिए प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना	45	12.16
	अनुसूचित जाति के छात्रों की योग्यता का उन्नयन	10	2.7
	अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए राष्ट्रीय फेलोशिप	10	2.7
सरकारी योजनाओं का उपयोग	सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए एनबीसीएफडीसी द्वारा शुरू की गई योजनाएं	4	1.08
	प्रधानमंत्री दक्ष और कुशलता सम्पन्न हितग्राही (पीएम-दक्ष) योजना	10	2.7
	अनुसूचित जाति विकास निगमों (एससीडीसी) को सहायता योजना	3	0.08
	अनुसूचित जातियों और अन्य के लिए प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना	25	6.75
	अनुसूचित जाति के छात्रों की योग्यता का उन्नयन	4	1.08
	अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए राष्ट्रीय फेलोशिप	5	1.35

आंकड़ों के जिलावार विश्लेषण से पता चलता है कि चंपारण जिले की तुलना में मधुबनी जिला सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मामले में आगे है। तालिका से पता चलता है कि मधुबनी जिले में कुल 222 उत्तरदाताओं में से 97 उत्तरदाताओं (43.69%) की सामाजिक-आर्थिक स्थिति कम थी, जबकि चंपारण जिले में कुल 103 उत्तरदाताओं में से 50 उत्तरदाताओं (48.54%) की सामाजिक-आर्थिक स्थिति कम थी।

तालिका 6: उत्तरदाताओं की जातिवार और ग्रामवार सामाजिक-आर्थिक स्थिति।

गाँव	सतलखा			लक्ष्मीपुर			सतलखा और लक्ष्मीपुर	खजूरी			बसुआरा	खजूरी और बसुआरा	सभी गांव
जाति सामाजिक-आर्थिक स्थिति	सी	बी	सी एंड बी	सी	डी	सी एंड डी	कुल	सी	बी	सी एंड बी	सी	कुल	कुल योग
कम	5 (20)	62 (60.7)	67 (43.92)	23 (38.33)	27 (49.09)	50 (43.48)	97 (43.69)	13 (40.62)	46 (65.71)	59 (57.83)	11 (52.38)	50 (48.54)	192 (51.89)
मध्यम	13 (52)	28 (27.45)	41 (38.32)	25 (41.67)	20 (36.36)	45 (39.13)	86 (38.74)	15 (46.88)	20 (28.5)	35 (34.3)	9 (42.86)	44 (42.72)	130 (35.15)
उच्च	7 (28)	12 (11.76)	19 (17.76)	12 (20)	8 (14.55)	20 (17.39)	39 (17.57)	4 (12.50)	4 (05.7)	8 (7.80)	1 (4.76)	9 (8.74)	48 (12.97)
कुल	25 (100)	102 (100)	127 (100)	60 (100)	55 (100)	115 (100)	222 (100)	32 (100)	70 (100)	102 (100)	21 (100)	103 (100)	370 (100)

वर्तमान संदर्भ में उच्च जाति और अनुसूचित जाति के बीच संबंध

अनुसूचित जातियाँ पारंपरिक रूप से निम्न श्रेणी की जातियों में से एक हैं। उन्हें 'शूद्र' के नाम से जाना जाता था और उन्हें हिंदू सामाजिक जीवन की मुख्यधारा से बाहर रखा जाता था। हालाँकि, भारत के पश्चिम के साथ संपर्क के कारण आधुनिक सामाजिक ताकतों के उदय के साथ, इन निचली जातियों के प्रति उच्च जातियों के रवैये में धीरे-धीरे बदलाव आने लगा।

स्वतंत्रता के बाद और खास तौर पर भारत में लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना के बाद, केंद्र और राज्य सरकारों ने उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिए कई कदम उठाए और इस दिशा में उन्हें कई सुविधाएँ दी गईं। समय-समय पर नियोजन की योजनाओं में सुधार किया जाता रहा है। सामाजिक पदानुक्रम में अनुसूचित जातियों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। सामाजिक पदानुक्रम में ऊपर जाने वाला व्यक्ति नए संगठनों में शामिल होने, अपने दोस्तों की पसंद बदलने और नए पड़ोस में जाने की प्रवृत्ति रखता है, जो उसकी नई प्राप्त स्थिति के अनुरूप होगा। क्या अनुसूचित जातियों की सामाजिक स्थिति वास्तव में बदल गई है।

तालिका 7: अनुसूचित जातियों और उच्च जातियों के बीच संबंध।

जाति	उच्च जातियों के साथ संबंध			
	अच्छा	संतोषजनक	असंतोषजनक	कुल
ईडीसी ग्रुप 1	43 (31.16)	87 (63.04)	8 (5.80)	138 (100)
ईडीसी ग्रुप 2	41 (31.06)	83 (62.88)	8 (6.06)	132 (100)
ईडीसी ग्रुप 3	12 (12)	21 (21)	67 (67)	100 (100)
कुल	96 (25.94)	191 (51.62)	83 (22.42)	370 (100)

अन्वेषक ने निम्नलिखित पहलुओं के माध्यम से वास्तविक स्थिति को जानने का प्रयास किया है। ऐसी स्थितियाँ हैं अनुसूचित जातियों और उच्च जातियों के बीच संबंध, उच्च जातियों द्वारा अनुसूचित जातियों से बनाए रखा गया अंतर और सामाजिक दूरी, उच्च जातियों द्वारा अनुसूचित जातियों के साथ भेदभाव/अस्पृश्यता, उच्च जातियों का अनुसूचित जातियों से मिलना और अनुसूचित जातियों का अनुसूचित जातियों से मिलना, उच्च जातियों द्वारा अनुसूचित जातियों से/के लिए भोजन/चाय स्वीकार करना या भोजन/चाय की पेशकश करना आदि।

तालिका 7 में दिखाए गए शेड्यूल कास्ट और ऊंची जातियों के बीच संबंधों के बारे में मिले जवाबों से पता चलता है कि 370 जवाब देने वालों में अलग-अलग राय है। कुल 96 जवाब देने वालों (25.94%) ने ऊंची जातियों के साथ अच्छे संबंध बताए, जबकि 191 जवाब देने वालों (51.62%) ने संतोषजनक संबंध बताए, और 83 जवाब देने वालों (22.42%) ने असंतोष जताया। EDC ग्रुप्स के एनालिसिस से पता चलता है कि EDC ग्रुप 1 में, 31.16% (43 जवाब देने वालों) के अच्छे संबंध हैं, 63.04% (87 जवाब देने वालों) संतुष्ट हैं, और 5.80% (8 जवाब देने वालों) संतुष्ट नहीं हैं। EDC ग्रुप 2 के जवाब देने वालों में भी ऐसा ही ट्रेंड दिखता है, जिसमें 31.06% (41 जवाब देने वालों) ने अच्छे संबंध बताए, 62.88% (83 जवाब देने वालों) ने संतोषजनक, और 6.06% (8 जवाब देने वालों) ने असंतोषजनक संबंध बताए। इसके उलट, EDC ग्रुप 3 में ज़्यादा नेगेटिव नज़रिया दिखता है, जिसमें सिर्फ़ 12% (12 जवाब देने वालों) के अच्छे संबंध हैं, 21% (21 जवाब

देने वालों) संतुष्ट हैं, और एक बड़ी संख्या में 67% (67 जवाब देने वालों) ने ऊंची जातियों के साथ असंतोषजनक संबंध बताए।
तालिका 8 में ऊंची जातियों द्वारा किए जाने वाले भेदभाव के बारे में मिले नतीजों से पता चलता है कि 370 जवाब देने वालों में से 83 (22.43%) का कहना है कि उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जबकि 287 (77.67%) का कहना है कि उन्हें ऐसा नहीं होता। इससे पता चलता है कि ज़्यादातर लोगों का मानना है कि ऊंची जातियां भेदभाव नहीं करतीं। EDC ग्रुप 1 में, सिर्फ़ 5.80% (8 जवाब देने वालों) ने भेदभाव की बात मानी, जबकि 94.20% (130 जवाब देने वालों) ने इसे मना किया। ग्रुप 2 में, 6.06% (8 जवाब देने वालों) ने भेदभाव की बात मानी, जो EDC ग्रुप 3 से बिल्कुल अलग है, जहाँ 67% (67 जवाब देने वालों) ने भेदभाव के अनुभव की पुष्टि की, जबकि सिर्फ़ 33% (33 जवाब देने वालों) ने इसे मना किया। यह बदलाव बताता है कि जैसे-जैसे सामाजिक पदानुक्रम में जाति का दर्जा कम होता जाता है, भेदभाव की भावनाएँ और ज़्यादा गंभीर होती जाती हैं।

तालिका 8: उच्च जातियों द्वारा अनुसूचित जातियों से बनाए गए अंतर को दर्शाने वाली प्रतिक्रियाएं।

जाति	उच्च जाति द्वारा बनाए गए अंतर के संबंध में प्रतिक्रियाएं		
	हाँ	नहीं	कुल
ईडीसी ग्रुप 1	8 (5.80)	130 (94.20)	138 (100)
ईडीसी ग्रुप 2	8 (6.06)	124 (93.94)	132 (100)
ईडीसी ग्रुप 3	67 (67)	33 (33)	55 (100)
कुल	83 (22.43)	287 (77.67)	370 (100)

तालिका 9: उच्च जातियों द्वारा अनुसूचित जातियों से बनाए गए सामाजिक दूरी को दर्शाने वाले उत्तर।

जाति	सामाजिक दूरी के संबंध में प्रतिक्रियाएँ					
	हाँ				नहीं	कुल योग
	अनुसूचित जाति हैं प्रस्तावित सीटें लेकिन हैं उच्च जातियों से दूरी बनाए रखने की अपेक्षा	की स्वीकृति नहींभोजन और चाय उच्चअनुसूचित जाति के निवास पर जातियां	खाना है सेवितउच्च जातियों के निवास पर अनुसूचित जातियों के लिए अलग से	कुल		
ईडीसी समूह 1	7 (11.66)	25 (41.67)	28 (46.67)	60 (43.48) (100)	78 (56.52)	138 (100)
ईडीसी समूह 2	10 (17.54)	39 (68.42)	8 (14.04)	57 (43.18) (100)	75 (56.82)	132 (100)
ईडीसी समूह 3	45 (45)	30 (30)	10 (10)	40 (40) (100)	15 (15)	100 (100)
कुल	62 (16.75)	94 (25.47)	46 (12.43)	157 (42.43) (100)	168 (45.45)	370 (100)

अनुसूचित जातियों और उच्च जातियों के बीच सामाजिक संपर्क का पारंपरिक पैटर्न प्रदूषण और सामाजिक दूरी के विचार को दर्शाता है। तालिका 4.8 उत्तरदाताओं द्वारा बताई गई उच्च जातियों द्वारा अपनाई गई सामाजिक दूरी की स्थिति को दर्शाती है। 370 उत्तरदाताओं में से 168 उत्तरदाताओं (45.45%) ने उत्तर दिया कि सामाजिक दूरी कभी नहीं देखी जाती है, जबकि 157 उत्तरदाताओं (42.43%) ने स्वीकार किया कि उच्च जातियों द्वारा अभी भी सामाजिक दूरी का पालन किया जाता है।

निष्कर्ष

हमारे अधिकांश उत्तरदाता पुरुष थे। अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाता एकल परिवारों से आए थे और केवल लगभग 40% संयुक्त परिवारों से आए थे। हमारे अधिकांश उत्तरदाता विवाहित थे। केवल कुछ ही अविवाहित या विधवा/विधुर थे। आवास की स्थिति के विश्लेषण से पता चलता है कि उत्तरदाताओं की आवास की स्थिति इस मायने में संतोषजनक थी कि उनमें से एक बड़ा हिस्सा पक्के घरों में रह रहा था। पक्के घरों वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सबसे अधिक था।

उपलब्ध आंकड़ों से पता चला है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षिक स्तरों में महत्वपूर्ण सहसंबंध है और यह निष्कर्ष निकाला गया है कि उच्च स्तर की शिक्षा वाले अनुसूचित जाति के लोग उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्राप्त करेंगे और इसके विपरीत। यह भी स्पष्ट किया गया है कि शैक्षिक स्तर और सामाजिक गतिशीलता में महत्वपूर्ण सहसंबंध है और यह निष्कर्ष निकाला गया है कि शैक्षिक स्तर का सामाजिक गतिशीलता पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यह पाया गया है कि शैक्षिक स्तर और अंतर-जातीय संबंधों के बीच एक महत्वपूर्ण सहसंबंध मौजूद है और अन्वेषक ने निष्कर्ष निकाला है कि शैक्षिक स्तर और अंतर-जातीय संबंध अनिवार्य रूप से एक दूसरे के साथ मेल खाते हैं।

संदर्भ

1. अफसाना डॉ, आलम त, मौर्य व, सिंह ए, कुमार र. भारतीय संस्कृति में जाति व्यवस्था: एक सामाजिक-धार्मिक विश्लेषण. 2023;84:136-146।
2. माथुर ग. भारत में जाति व्यवस्था की स्थिरता और परिवर्तन; 2022।

3. वैद द. समकालीन भारत में जाति: लचीलापन और दृढ़ता. Annual Review of Sociology. 2014;40:391-410. DOI: 10.1146/annurev-soc-071913-043303।
4. अहमद अ. उत्तर प्रदेश के रायीनों में सामाजिक गतिशीलता और जाति का राजनीतिकरण. Contemporary South Asia; 2023, 31. DOI: 10.1080/09584935.2023.2238266।
5. कपूर र. भारत में जाति व्यवस्था में बदलाव को समझना; 2023।
6. लैशराम च, हाओकिप ख. क्या जाति-आधारित सामाजिक स्तरीकरण सामाजिक पूंजी और जीवन संतुष्टि के बीच संबंधों को नियंत्रित करता है? भारत से साक्ष्य. International Journal of Sociology. 2021;51:1-20. DOI: 10.1080/00207659.2021.1978172।
7. जोधका एसएस. समकालीन भारत में जाति. दूसरा संस्करण; 2017. DOI: 10.4324/9780203701577।
8. सानिल आ. जाति भारत में काम और रोजगार की उत्पत्ति और परिवर्तन को कैसे आकार देती है. Journal of Asian and African Studies; 2024. DOI: 10.1177/00219096231225955।
9. वैद द. असमान बाधाएं: समकालीन भारत में सामाजिक गतिशीलता; 2018. DOI: 10.1093/oso/9780199480142.001.0001।
10. वैद द. भारत में सामाजिक गतिशीलता के पैटर्न और शिक्षा की भूमिका. Contemporary South Asia. 2016;24:1-28. DOI: 10.1080/09584935.2016.1208637।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.